IJCRT.ORG ISSN : 2320-2882

INTERNATIONAL JOURNAL OF CREATIVE RESEARCH THOUGHTS (IJCRT)

An International Open Access, Peer-reviewed, Refereed Journal

आजादी का अमृत महोत्सव: स्वाधीनता की अज्ञात वीरांगनायें

डॉ. अंजली सेठ (असि. प्रोफेसर)
समाजशास्त्र एवं राजनीति विज्ञान,
समाज विज्ञान संकाय
दयालबाग एजूकेशनल इन्टीट्यूट
दयालबाग, आगरा–282005

श्रीमती रिंकी (शोधार्थिनी)
समाजशास्त्र एवं राजनीति विज्ञान,
समाज विज्ञान संकाय
दयालबाग एजूकेशनल इन्टीट्यूट
दयालबाग, आगरा–282005

मोबाईल न०–9458251712
Mail id. rinkivinod5@gmail.com

सार– भारतीय राष्ट्रीय आन्दोलन पुरुष प्रधान था यही कारण है कि भारतीय राष्ट्रीय आन्दोलन पर लिखी गई कई पुस्तकों लेखों आदि में महिलाओं की सहभागिता और उनके योगदान को उचित स्थान नहीं मिला। तत्कालीन पितृसत्तात्मक समाज में महिलाओं की दुनिया घर की चहारदीवारी के भीतर सीमित थी और उसे पुरुष की अनुगामिनी ही माना जाता था फिर भी राष्ट्रीय आन्दोलन का इतिहास तमाम ऐसी महिलाओं के साहस, त्याग व बलिदान से भरा है, जिन्होंने अपनी पारिवारिक भूमिका के साथ–साथ राष्ट्रवादी गतिविधियों में भी महत्वपूर्ण भूमिका निभाई थी अनेक महिलाओं ने अपनी वीरता, साहस और नेतृत्व क्षमता का परिचय देते हुए भारत की स्वतंत्रता के लिये पुरुषों के साथ कंधे से कंधा मिलाकर संघर्ष किया। जैसे– वीरांगना लाजो देवी, उदा देवी, अजीजन बाई, ननीवाला देवी, मृणालिनी देवी, सुनीति देवी, आजाद हिन्द फौज की जासूस नीरा आर्य आदि। क्रांतिकारियों के कार्य में प्रत्यक्ष रूप से महत्वपूर्ण सहयोग देने वाली सुशीला देवी, प्रकाशवती, लीलानाग, इंदुमती सिंह, सुहासिनी गांगुली, सावित्री देवी एवं ऐमू बाई जैसे सैकड़ों नामों से लेकर उजली मिसालों की यह परम्परा अप्रत्यक्ष सहयोग के हजारो लाखों नामों तक फैली है। प्रस्तुत शोध पत्र में ऐसी ही अज्ञात वीरांगनाओं का अध्ययन किया गया है।

सूचक शब्द– क्रांतिकारी, वीरांगना, राष्ट्रीय आन्दोलन, अमृत महोत्सव, आजादी, बलिदान, नेतृत्व संघर्ष।

प्रस्तावना–

स्वाधीनता के अमृत महोत्सव वर्ष में देश के लिये सर्वस्व न्यौछावर करने वाले गुमनाम स्वतंत्रता सेनानियों को याद किया जा रहा है। आजादी की लड़ाई में महिलाओं ने न सिर्फ अंग्रेजों से जमकर लोहा लिया बल्कि क्रांति की जो अलख जगाई उसी से घबराकर अंग्रेजों ने अपने कदम पीछे हटाये। इतिहास के पन्नों को पलटते हुये जब–जब हम पीछे जायेंगे महिलाओं के अदम्य साहस से भरी कई कहानियाँ हमारे देश के गौरव को बढ़ाती दिखाई देती है। भारतीय वीरागंनाओं का जिक्र किये बिना 1857 से 1947 तक की स्वाधीनता की दास्तान शायद अधूरी रह जायेगी। ये वीरांगनाये सभी वर्गों का प्रतिनिधित्व करती दिखाई दी। 1857 से पूर्व या 1947 तक ऐसी अनगिनत महिलायें जिन्हें इतिहास के पन्नों में जगह तो नहीं मिली पर इनके योगदान को देश भुला नहीं सकता। ऐसी ही लाजो देवी, ऊदा देवी, अजीजन बाई, ननी बाला देवी, मृणालिनी देवी, सुनीति देवी नीरा आर्य वीरांगनाओं के अदम्य

साहस एवं वीरता से भारतीय इतिहास सुशोभित है। ये क्रांतिकारी वीरांगनायें वर्तमान पीढ़ी के लिए प्रेरणास्रोत हैं।

हमारा देश आजादी का 75वाँ साल पूरा कर रहा है। इस जश्न को मनाने के लिये भारत सरकार आजादी का अमृत महोत्सव मना रही है। देश भर में देशभक्ति की भावना को फैलाने के उद्देश्य से मनाये जाने के अलावा आजादी का अमृत महोत्सव भारत के लोगों और वीर सिपाहियों एवं गुमनाम नायक एवं नायिकाओं को समर्पित है। स्वाधीनता के अमृत महोत्सव वर्ष में देश के लिये सर्वस्व न्योछावर करने वाले गुमनाम, स्वतन्त्रता सेनानियों को याद किया जा रहा है। इनमें बहुत सी वीरांगनाए भी शामिल थी।

भारतीय राष्ट्रीय आंदोलन की प्रकृति मूलतः पुरुष प्रधान थी और सम्भवतः यही कारण है कि राष्ट्रीय आंदोलन पर लिखी गई तमाम पुस्तकों, लेखों आदि में महिलाओं की सहभागिता और उनके योगदान को यथोचित स्थान नहीं मिल सका है। वास्तव में तत्कालीन पितृसत्तात्मक समाज में महिलाओं की दुनिया घर की चाहरदीवारी के भीतर सीमित थी और उसे पुरुष की अनुगामिनी ही माना जाता था फिर भी राष्ट्रीय आंदोलन का इतिहास तमाम ऐसी महिलाओं के साहस, त्याग व बलिदान से भरा पड़ा है जिन्होंने अपनी पारिवारिक भूमिका के साथ–साथ राष्ट्रवादी गतिविधियों में हिस्सेदारी की। तमाम महिलाओं ने अपनी वीरता, साहस और नेतृत्व

क्षमता का परिचय देते हुए भारत को स्वतन्त्रता के लिए पुरुषों के साथ कंधे से कंधा मिलाकर संघर्ष किया। गांधी जी ने भी स्वीकार किया था कि हमारी माँ बहनों के योगदान के बिना यह स्वतन्त्रता का संघर्ष संभव नहीं था। 1857 से लेकर 1947 तक बहुत सी ऐसी वीरांगनाये जिनका योगदान राष्ट्रीय आंदोलन में महत्वपूर्ण रहा परन्तु इतिहास में उनका जिक्र हुआ ही नहीं और हुआ भी तो न के बराबर। ऐसी ही कुछ प्रमुख महिलायें– 1857 की क्रांति से पूर्व 1757 से 1856 तक एक पूरी सदी का इतिहास ऐसे सशक्त विद्रोहों से भरा पड़ा है जैसे– जंगल महाल का विद्रोह, सन्यासी विद्रोह, चुआड़ विद्रोह, कित्तूर विद्रोह, बैरकपुर का सैनिक विद्रोह, वहाबी विद्रोह, संथाल विद्रोह आदि।

बैरकपुर के सैनिक व्रिद्रोह और वहाबी विद्रोह को छोड़कर इन सभी में स्त्रियों ने न केवल भाग लिया, उन्होंने कई विद्रोह का सफल नेतृत्व भी किया। इनमें से संथाली विद्रोह की नेता देवी चौधरानी, चुआड विद्रोह की नेता रानी शिरोमणि, कित्तूर की वीर रानी चेनम्मा, शिवगंगा स्टेट की विद्रोही वीरांगना वेलूनाचियार के नाम प्रमुख रूप से लिये जा सकते हैं। नेपाल की महारानी सम्राज्य लक्ष्मी देवी और पंजाब की रानी जिंदाकौर अंत में हारकर भी जी जान से लड़ी थी, संथाल विद्रोह के दौरान दबी–कुचली आदिवासी स्त्रियों ने भी अपने वीरता के परचम लहराये थे।

1857 की क्रांति में तो महिलाओं की व्यापक भागीदारी रही। 1857 की क्रांति में लगभग 1600 महिलाओं के बलिदान की जानकारी मिलती है। बहुत सी वीरांगनायें भी हैं जिनका त्याग और बलिदान का कोई रिर्काड दर्ज नहीं हुआ या वह जेल नहीं गई तो उन्हें वीरागंनाओं श्रेणी में रखा ही नहीं गया ऐसी ही कुछ गुमनाम वीरांगनायें–

वीरांगना लाजो देवी–

1857 के प्रथम स्वतन्त्रता संग्राम का प्रणेता अमर शहीद मातादीन बाल्मीकि को बताया जाता है। उनके साथ उनकी पत्नी लाजो का पूरा सहयोग एवं साथ था जो 1857 में लड़ते हुए शहीद हो गयी। इस महान क्रांति के वीरतापूर्ण इतिहास के विषय में कुसुम विमोगी लिखते हैं, कि मातादीन में यह चेतना कहाँ से आयी। इसकी प्रेरणा उसे उनकी पत्नी से मिली। मातादीन की पत्नी लाजो भी अंग्रेजी सैनिकों की छावनी में सफाई का काम करती थी यह बहुत स्वाभिमानी स्त्री थी। एक अंग्रेज अधिकारी के निवास पर जब लाजो काम करने जाती तो वह लाजो से अभद्र बातें करता। लेकिन लाजो की क्रोधित आंखों को देखकर किसी प्रकार की हरकत का साहस नहीं कर पाता। एक दिन उसने लाजो को बताया कि यह देश हमारा गुलाम है यहाँ के सभी पुरुष हमारे गुलाम हैं तो उनकी औरतें भी हमारी गुलाम है, तुम तो जाति से भंगी हो जब ब्राह्मण, बनिया, राजपूत हमारे गुलाम हैं। मैं चाहूँ तो तुम्हारे साथ जबरदस्ती कर सकता हूँ।

लाजो को अंग्रेज की इस बात से बहुत कष्ट हुआ और वह पति से घर आकर बोली कि चाहे मेरी जान चली जाये पर मैं अंग्रेजों की गुलामी नहीं करूंगी। और मुझे स्नेह, प्रेम करते हो तो यह कारतूस की बात जो गाय और सुअर की चर्बी से बनाये गये हैं छावनी में सबको बता दो। मातादीन ने कहा, ''इसमें जान जाने का खतरा है अंग्रेजों को पता चला तो मेरे साथ तुम्हारा भी न जाने क्या हाल करेंगे।''

तो लाजो ने कहा "तुम डरो मत मैं तुम्हारे साथ ही 10-20 अंग्रेजों को मारकर मरूंगी। हकीकत में मंगलपांडे को जिस दिन फांसी लगी उस दिन इस वीरांगना ने अपने पति मातादीन के साथ कंधे से कंधा मिलाकर अंग्रेजों से अंतिम सांस तक लड़ते हुए वीरगति को प्राप्त हो गई।

वीरागंना उदा देवी–

ऊदा देवी पासी लखनऊ के उजरिया गाँव के सामान्य घर में जन्मी थी। उस समय अंग्रेजों का राज्य था। जनता अत्याचारों से तस्त थी। ऊदा देवी ने भी बचपन से अपने चारों ओर जो माहौल देखा उसमें अंग्रेजों के प्रति असन्तोष और बगावत की गूंज थी। बचपन से ही ऊदा देवी के मन में ऐसे विचार आते थे कि कुछ ऐसा हो कि सारे अंग्रेज यहाँ से भगा दिये जाये।

ऊदा देवी की शादी मक्का पासी से हुयी थी। मक्का पासी बेगम हजरत महल की फौज में सिपाही था। मक्का पासी को अंग्रेजों से गहरी नफरत थी। ऊदा देवी को भी वह उस समय की होने वाली क्रान्ति के बारे में अक्सर बताया करता था। मक्का पासी ने ऊदा देवी को बताया कि बेगम हजरत महल ने एक जनानी पलटन बनाई है। रानी की इस फौज को लहंगा पलटन के नाम से जाना जाता था। तब ऊदा देवी ने अपने पति से पलटन में भर्ती होने की बात कही। मक्का पासी ने ऊदा देवी को भी बेगम हजरत महल की पलटन में शामिल करा दिया। बहुत जल्दी ही ऊदा देवी बेगम की प्रिय विश्वास पात्र बन गयी।

ऊदा देवी और उनके साथियों को सूचना मिली कि मेजर हैवलॉक बाराबंकी से चिनहट के रास्ते होकर एक बड़ी सेना लेकर आ रहा है। ऊदा देवी ने अपने 200 साथियों के साथ सिकन्दर बाग के पास हैवंलाक की सेना के ऊपर हमला बोल दिया। मेजर कैम्पवेल को सूचना थी बेगम हजरत महल ने एक जनानी पलटन तैयार कर रखी है।

मेजर कैम्पवेल ने चारों ओर से सिकन्दर बाग को घेर लिया व दोनों ओर से धुआंधार गोलियां चलने लगी। एक–एक करके ऊदा देवी की कई साथी शहीद हो गई। मगर उसने हिम्मत नहीं हारी। तभी किसी से सूचना मिली कि मक्का पासी (पति) को भी गोली लगी है। परन्तु उसने किसी भी प्रकार की परवाह किये बगैर, धुआंधार गोलीबारी जारी रखी। ऊदा देवी पीपल के पेड़ के पीछे छिपी बैठी थी, और सधे निशाने से उन्होनें लगातार एक–एक करके अकेले ही अंग्रेजी सेना के 36 सिपाहियों को मार गिराया।

कैप्टेन वैलेस को समझ नहीं आ रहा था कि गोली कहाँ से आ रही है। अचानक से कैप्टन बैलेस की नजर पीपल के पेड़ के पीछे छिपे हुए व्यक्ति पर पड़ी वह समझ गया कि यह गोलीबारी वहीं से की जा रही है। उसने गोली की सीध पर निशाना लगाया। ऊदा देवी को गोली लगी और वह वहीं गिर पड़ी और सो गई सदा के लिये। कैप्टन वैलेस ने जब पास जाकर देखा कि गोली चलाने वाली एक औरत थी और उसकी गोली से एक औरत की हत्या हुयी है तो उसे बहुत अधिक दुःख हुआ।

अंग्रेज अधिकारी मिर्चाइल फोर्बिस ने अपने संस्मरण में लिखा है– 16 नवम्बर सन् 1857 के सिकन्दर बाग के युद्ध में रक्षक पासी औरतें जनानी फौज से कंधे से कंधा मिलाकर लड़ रही थी। ऊदा देवी भी उनमें से एक थी। मगर सबसे अलग वो वीर थी एक अच्छी योद्धा थी, और अकेले ही उसने अंग्रेज सेना के छत्तीस सिपाहियों को मार गिराया था। विश्व इतिहास में पहला ऐसा वाक्या है जब पति–पत्नी दोनों जिनके पास अपना खुद का कुछ भी न होते हुए सिर्फ देश की खातिर बलिदान हुए।

वीरांगना आजीजन बाई–

1857 के स्वतन्त्रता संग्राम की बलिदानी महिलाओं में कानपुर की नाचने वाली महिला अजीजन बेगम का नाम विशेष उल्लेखनीय है। अजीजन बेगम का जन्म 1832 लखनऊ में हुआ था। आगे चलकर दुर्भाग्य की मारी अजीजन कानपुर आकर मशहूर तवायफ उमराव जान अदा के साथ नाचने गाने का काम करने लगीं। अजीजन बाई के यहाँ आकर आने जाने वालों की भीड़ लगी रहती थी। तरह–तरह के लोग यहाँ आकर तरह–तरह की बातें किया करते थे। लोगों की बातें सुन–सुनकर वह भी देश के हालात से अच्छी तरह वाकिफ हो गयी थी।

1 जून 1857 को जब कानपुर में नाना साहब के नेतृत्व में तात्या टोपे अजीमुल्ला खान बाबा साहब, सूबेदार टीका सिंह और शमशुद्दीन खान क्रांति की योजना बना रहे थे। उस बैठक में आजीजन बाई भी थी। नाना साहब के आहवान पर अजीजन ने अंग्रेजों से टक्कर लेने के लिए सशक्त दल गठित किया एवं स्वयं उसकी कमान संभाली।

प्रसिद्ध इतिहासकार सर जार्ज ट्रवेलियन ने उसका वर्णन एक योद्धा के रूप में इस प्रकार किया– घोड़े पर सवार सैनिक वेशभूषा में अनेक तमगे लगाये और हाथ में पिस्तौल लिये अजीजन बिजली की तरह अंग्रेज सैनिकों को रौंदती चली जाती थी उसके साथ महिलाओं की घुड़सवार टुकड़ी भी घूमा करती थी सैनिकों को हथियार देना प्यासे सिपाहियों को पानी पिलाना एवं घायलों को देखभाल करना उनके महत्वपूर्ण कार्य थे। कानपुर पर विद्राहियों का कब्जा होने पर बंदी अंग्रेज स्त्रियों व बच्चों की हत्या के लिये विद्रोहियों को उकसाने वाली अजीजन ही थी। अजीजन द्वारा 'मस्तानी टोली' का गठन किया गया जिसमें 400 महिलायें थी। जो मर्दाना भेष में रहती थी। सतीचौरा घाट से बचकर बीबी घर में रखी गई 125 महिलायें और बच्चों की रखवाली का कार्य अजीजन बाई की टोली के जिम्मे ही था। नानक चन्द्र की डायरी के अनुसार– "लहराते बालों व चमकती तलवारें लिये फौजी वेश में 21 दिनों तक चली लड़ाई में अजीजन हर मोर्चे पर आगे–आगे मौजूद थी। उसकी वीरता को देखकर कानपुर के निवासी आश्चर्य चकित थे। जब विद्रोह अपनी चरम सीमा पर था अजीजन अपने घोड़े पर सवार होकर हाथ में तलवार और बन्दूक लेकर अंग्रेज सिपाहियों से लड़ने लगी। एक तरफ हैवलाक की तोपे छूटती तो दूसरी तरफ अजीजन की गोलियाँ अंग्रेजी सेना को छलनी करती जाती। आखिर में अंग्रेजों से ज्यादा मुकाबला न कर सकी और पकड़ी गई। उसके हाथों में हथकड़ी डाल दी गई। उसे हैवलाक के सामने पेश किया गया। हैवलाक उसे देख कर हैरान हो गया उसे विश्वास ही नहीं हो रहा था कि इतनी सुन्दर और इतनी कोमल औरत के हाथ अंग्रेजी सेना के खून से सने है। हैवलाक ने अजीजन से कहा कि वह ब्रिटिश हुकूमत के सामने मॉफी मांग ले तो उसे प्राण दंड नहीं दिया जायेगा। अजीजन देश प्रेम की दीवानी थी। उसे मरना मंजूर था परन्तु झुकना पसन्द नहीं था। वह ऐसे फौलाद की बनी थी कि टूट सकती है परन्तु झुक नहीं सकती। हैवलाक के सामने ही नाना साहब की जय हिन्दुस्तान जिन्दाबाद के नारे लगाये अजीजन ने ।इन नारों ने आग में घी का काम किया। अजीजन के जबाव से हैवलाक हैरान हो गया उसने चिढ़कर गुस्से से कहा इसे गोलियों से भून दिया जाये देखते ही देखते अजीजन के ऊपर गोलियों की बौछार होने लगी। अजीजन की हिम्मत और दिलेरी से सब आश्चर्यचकित रह गये।

ननी बाला देवी–

भूली बिसरी क्रांतिकारी महिलाओं में ननीबाला देवी बंगाल का एक ऐसा नाम है जिनकी कहानी पढ़कर रोंगटे खड़े हो जाते हैं। हावड़ा में 1888 में जन्मी ननी वाला देवी 1916 में विधवा हो गयी थी। उन्होंने विप्लवी अमरेन्द्रनाथ चटर्जी से दीक्षा ली और क्रांतिकारी दल की गति विधियों में सक्रिय हो गयी। क्रांति के प्रथम दौर में क्रांतिकारियों के लिए, आश्रम स्थल जुटाने, फंड एकत्र करने, गुप्त दस्तावेज इधर से उधर पहुँचाने, युवक–युवतियों को प्रशिक्षित करने आदि सभी कार्यों में ननी बाला देवी का योगदान था। पर वह पुलिस की पकड़ में नहीं आती थी उनके भूमिगत रहकर काम करने के कारण पुलिस को उनकी सूचना देने वाले के लिए पुरुस्कार की घोषणा करनी पड़ी थी।[1]

एक दिन वह हैजे से पीड़ित होकर घर पर आराम कर रही थी। पुलिस द्वारा उसी हालत में उन्हें गिरफ्तार कर लिया गया। उनसे सूचनायें प्राप्त करने के लिए पुलिस उनसे अमानवीय ढंग से पेश आयी, उन्हें बहुत यातनायें दी गई। निर्वस्त्र करके इतना पीटा गया कि वह अधमरी हो गयी तब भी पुलिस को उन्होंने कुछ नहीं बताया।

उन्हें दी जाने वाली क्रूर यातनाएं तीन दिन लगातार जारी रही। इन तीन दिनों में उनकी हालत पागलों जैसी हो गई थी। कभी बेहोश हो जाती, कभी होश में आने पर फिर बडबड़ाने लगती। पर अपनी बड़बड़ाहट में भी वह अंग्रेजों के विरुद्ध आक्रोश और घृणा ही उगलती। अपनी नींद बेहोशी, अर्ध विक्षिप्तावस्था में भी उन्होंने पुलिस को कोई सूचना नहीं दी। पुलिस अधिकारी उनकी ऐसी दृढ़ता व बहादुरी देखकर स्तब्ध थे। तंग आकर उन्होंने ननीबाला देवी को और यातनायें देना बन्द कर दिया।

उनके साथ जेल में दुकड़ी बाला नाम की एक गरीब क्रांतिकारी युवती भी थी। उसके पास से पिस्तौल बरामद होने पर उसे 'आर्म्सएक्ट' में दो साल की कड़ी कैद की सजा दी गई। जेल अधिकारी उससे जबरदस्ती इतना श्रम लेते थे कि वह बेहाल हो जाती थी इसके विरोध में ननी बाला देवी ने जेल में भूख–हड़ताल कर दी।

ननी बाला देवी ने जेल में मांग रखी कि जेल में खाना पकाने के लिये ब्राह्मण स्त्री रखी जाये जेल अधिकारी उनसे परेशान थे। किसी भी तरह उन्हें खाना खिलाने में असमर्थ रहकर जब सुपरिटेंडेंट ने उनसे पूछा कैसे खाएंगी। तो उनका उत्तर था कि "माँ शारदा देवी के पास ले जायें तब।'' और उन्होंने शारदा देवी के नाम पत्र लिखकर सुपरिटेंडेंट को दे दिया।

सुपरिटेंडेंट ने पत्र फाड़कर उसके टुकड़े उनके सामने बिखेर दिये और उन्हें कसकर थप्पड़ मारा। दूसरा मारने जा रहा था कि भूख हड़ताल से कमजोर हाथो से ननी बाला देवी ने उसका हाथ पकड़ लिया और कड़ककर कहा "हम स्वतन्त्रता सैनिक व राज्य कैदी हैं तुम्हारे निजी गुलाम नहीं तुम हम पर यूं जुल्म नहीं कर सकते, सुपरिटेंडेंट का हाथ रुक गया। उसके बाद भी दुकड़ी बाला की मेहनत कम करने पर ही 21 दिन बाद उन्होंने अपनी भूख हड़ताल तोड़ी थी।

1919 में वह जेल से रिहा हुई, पर ऐसी साहसी देशभक्त नारी को भी बाद में किसी ने सहारा नहीं दिया। उनका घरवार, सब कुछ छिन चुका था। अब वह एक छोटी सी झुग्गी में रहकर अभाव कष्ट व बीमारी से जर्जर शरीर का भार ढो रही थी। अंग्रेजों के डर से उन्हें दूसरों ने तो क्या अपने रिश्तेदारों तक ने सहारा नहीं दिया। इस बिडम्बना की कचोट उन्हें अंतिम समय तक रही। आज भी क्या देशवासी उनका नाम तक नही जानते हैं।

मृणालिनी देवी–

श्री सुविमल राय की पत्नी मृणालिनी देवी ने 1931 में अपने पति के साथ क्रांतिकारी आंदोलन में भाग लिया था। 'सांडर्स वध' के बाद जब केन्द्रीय असेम्बली बम–कांड का भी धमाका हुआ तो पंजाब से बंगाल तक, मध्य व दक्षिण भारत तक भी क्रांतिकारियों का व उनके गुप्त अड्डों का पता लगाने के लिए पुलिस की सरगर्मियां बढ़ गई थी। तभी तलाशियों के इस दौर में बनारस में इनके घर से भी बम बरामद हुए थे। और जुर्म में श्री सुविमल राय और मृणालिनी देवी पकड़ लिये गये थे। पति –पत्नी दोनों को बनारस बम कांड के मुदद्में में सात–सात साल की कड़ी कैद की सजा सुनाई गई।

सुनीति देवी–

सुनीति देवी कानपुर में श्री चन्द्र शेखर आजाद के दल में सक्रिय थीं। उनके कागज पत्र, अस्त्र–शस्त्र इधर से उधर पहुँचाने, छिपाने आश्रय–स्थल जुटाने आदि का काम उन्होंने बखूबी संभाला और किसी को कानोंकान खबर न होने दी। आजाद प्रायः इन्हीं के घर ठहरते थे, पर आजाद की मृत्यु के बाद देर से उनके बारे में पुलिस को कोई सुराग मिला तो 1934 में उन्हें पकड़ लिया गया। नेता की मृत्यु हो जाने पर भी कुछ प्रमाणों के आधार पर इन्हें 1934 से 1937 तक जेल की सजा काटनी पड़ी।

आजाद हिन्द फौज की जासूस नीरा आर्य–

नीरा आर्य बहुत ही साहसी महिला थी। नीरा आर्य सुभाष चन्द्रबोस के साथ ही आजाद हिन्द फौज में सिपाही हुआ करती थी। वे झांसी रेजिमेंट की मुख्य सिपाही थी। इनके साथ इनके भाई भी आजाद हिन्द फौज में शामिल थे जिनका नाम बसंत कुमार था। नीरा आर्य "नीरा नागिनी'' नाम से भी उस समय मशहूर थी आज इनके नाम को भूल से गये हैं लेकिन नीरा एक अत्यंत साहसी एवं वीर स्वाभिमानी और देशभक्त महिला थी जिन्होंने देश के आगे कुछ भी नहीं सोचा।

नीरा आर्य उत्तर प्रदेश के बागपत जिले में खेकड़ा में 5 मार्च 1902 में इनका जन्म हुआ था। जब नीरा मात्र आठ वर्ष की थी तभी महामारी के चलते उनकी माता लक्ष्मी देवी व पिता महावीर का देहांत हो गया था। उन दिनों खेकड़ा में आर्य समाज के एक सम्मेलन में भाग लेने कलकत्ता से आये सेठ छज्जूमल ने नीरा व उनके भाई को गोद ले लिया था। इससे नीरा की शिक्षा–दीक्षा कलकत्ता में हुई। नीरा को कई भाषाओं का ज्ञान था जैसे कि हिन्दी, अंग्रेजी, बंगाली इन भाषाओं में इनकी गहरी पकड़ थी। नीरा आर्य साहसी होने के साथ–साथ बुद्धिमान भी थी। इसलिये उनको आजाद हिन्द फौज का सबसे पहले जासूस होने का गौरव मिला था। सबसे महत्वपूर्ण बात यह थी कि स्वयं सुभाष चन्द्र बोस ने उनको इतनी बड़ी जिम्मेदारी अपने हाथों से सौंपी थी। उन्होंने अंग्रेजों की जासूसी अपने कुछ साथियों के साथ मिल कर की थी। जिनमें सरस्वती राजमणि, मानवती आर्या और खुद सुभाष चन्द्र बोस शामिल थे।

25 दिसम्बर 1928 को नीरा का विवाह कलकत्ता में ही श्रीकांत जयरंजन से हुआ था, जो अंग्रेज सरकार के गुप्तचर विभाग में अफसर थे। नीरा को विवाह के बाद पता चला कि उनके पति कई स्वतन्त्रता सेनानियों को पकड़वा चुके हैं। इसी बीच उन्हें यह भी जानकारी हुई कि उनके पति अंग्रेज अफसरों के साथ मिलकर नेता जी सुभाष चन्द्र बोस की हत्या की योजना बना रहे हैं इस पर भड़की नीरा ने पति से दो टूक कह दिया कि सरकारी नौकरी या मुझमें से किसी एक को चुन लो। पति ने जब सरकारी नौकरी को चुना तो उसी क्षण नीरा आर्य ने ससुराल को छोड़ दिया।

अरेस बाद नीरा आर्य कलकत्ता से दिल्ली के शाहदरा में अपने धर्म पिता आचार्य चतुरसेन के पास आ गई। शाहदरा में रहते हुये नीरा बच्चों को संस्कृत व अंग्रेजी का ट्यूशन पढ़ाने लगी। इसी दौरान नीरा अपने एक परिचित राम सिंह के माध्यम से आजाद हिन्द फौज की रानी झांसी रेजीमेंट में भर्ती हो गयी।

नीरा आर्य ने रेजीमेंट की प्रथम कमांडर डॉ० लक्ष्मी सहगल व सचिव मानवती आर्या के नेतृत्व में सैन्य प्रशिक्षण प्राप्त किया। 22 अक्टूबर 1943 को सुभाष चन्द्र बोस ने रानी झांसी रेजीमेंट की विधिवत घोषणा की। नीरा आर्य की काबिलियत को देखते हुए उन्हें गुप्त चर विभाग में अंग्रेजों की जासूसी करने की जिम्मेदारी दी गई, इसी कारण उन्हें देश की पहली महिला जासूस भी कहा जाता है।

गुप्तचर विभाग के प्रमुख पवित्र मोहन राय के आदेश पर नीरा आर्य ने अपनी सहेली सरस्वती राजामणि, जानकी, बेला और दुर्गा आदि के साथ जासूसी की जिम्मेदारी संभाली। उन्होंने लड़कों की वेशभूषा में अंग्रेज अधिकारियों के घरों में काम करना शुरू कर दिया।

इसी बीच जासूसी करते हुये दुर्गा पकड़ी गई। नीरा व सरस्वती राजामणि किन्नरों की वेशभूषा में बंदीगृह के नजदीक पहुँची और नशीला पदार्थ खिलाकर अंग्रेज अधिकारियों व सैनिकों को बेहोश कर दुर्गा को छुड़ा लिया। अचानक एक सैनिक को होश आ गया और उसने गोली चला दी जो भागते हुए सरस्वती राजामणि के पैर में लग गई। लेकिन सरस्वती ने हिम्मत नहीं हारी और जंगल में एक पेड़ पर चढ़कर जान बचाई।

जब तीनों आजाद हिन्द फौज के बेस कैंप पहुँची तो नेता जी सुभाष चन्द्र बोस ने तीनों की बहादुरी की खूब प्रशंसा की। इसके बाद नीरा आर्य को कैप्टन बनाया गया। साथ ही सुभाष चन्द्र बोस की सुरक्षा की जिम्मेदारी भी नीरा आर्य को मिल गई।

नीरा आर्य ने अपनी आत्मकथा मेरा जीवन संघर्ष में लिखा है कि एक रात वह कैंप में नेता जी की सुरक्षा में तैनात थी तभी उन्हें नजदीक किसी के होने का एहसास हुआ उन्होंने चेतावनी दी तो उनके पति श्रीकांत जयरंजन हाथ में रिवाल्वर लेकर खड़े हो गये। श्रीकांत ने नेताजी पर गोली चला दी, लेकिन गोली उनके ड्राइवर निजामुद्दीन को लगी। इस पर नीरा ने पतिहंता के कलंक को स्वीकार करते हुये वही रायफल की संगीन से पति को मार डाला।

आजाद हिन्द फौज के समर्पण के बाद नीरा आर्य पर राजद्रोह और पति की हत्या के आरोप में एक साथ दो मुकदमें चले। मुकदमें के दौरान इन्हें कोलकत्ता जेल में रखा गया। जहाँ इन्हें घोर यातनाएँ दी गई।

जेल के अंदर लोहे के किसी गर्म औजार से इनके स्तन भी काट दिये गये थे परन्तु इन्होंने आजाद हिन्द फौज के लापता सैनिकों और नेताजी सुभाष के रहस्य मय रूप से लापता होने की कोई भी जानकारी अंग्रेजों या बंदी अवस्था में जेलर को नहीं दी। अंग्रेजों का मानना था कि नेता जी की विमान दुर्घटना में मौत नहीं हुई वे लापता है, जिसके बारे में नीरा आर्य ही जानती थी।

इस सम्बन्ध में उन्होंने अपनी आत्मकथा में लिखा है – "मैं जब कोलकाता जेल में थी, तो हमारे रहने का स्थान वे ही कोठरियाँ थी, जिनमें अन्य महिला राजनैतिक अपराधी रही थी अथवा रहती थी। हमे' रात के 10 बजे कोठरियों में बंद कर दिया गया बिना चटाई कम्बल के। मन में चिन्ता होती थी कि क्या इसी प्रकार की स्वतन्त्रता गहरे समुद्र में अज्ञात द्वीप में मिलेगी कि अभी से ओढनी अथवा बिछाने का ध्यान छोड़ने की आवश्यकता आ पड़ी है? जैसे–तैसे जमीन पर ही लोट लगाई और नींद भी आ गई। लगभग 12 बजे तक पहरेदार दो कम्बल लेकर आया और बिना बोले–चाले ही ऊपर फेंककर चला गया। कम्बलों का गिरना और नींद का टूटना भी एक साथ ही हुआ। बुरा तो लगा, परन्तु कम्बलों को पाकर संतोष भी आ ही गया। अब केवल वही एक लोहे के बंधन का कष्ट और रह–रहकर भारत माता से जुदा होने का ध्यान साथ में था।

"सूर्य निकलते ही मुझको खिचड़ी मिली और लुहार भी आ गया। हाथ की सांकल काटते थोड़ा–सा चमड़ा भी काटा, परन्तु पैरों में से आड़ी–बेडी काटते समय केवल दो तीन बार हथोड़ी से पैरों की हड्डी को जाँचा कि कितनी पुष्ट है। मैंने एक बार दुःखी होकर कहा, "क्या अंधा है, जो पैर में मारता है?''

"पैर क्या हम तो दिल में भी मार देंगे, क्या कर लोगी?'' उसने मुझे कहा था। "बंधन में हूँ तुम्हारे, कर भी क्या सकती हूँ "फिर मैंने उनके ऊपर थूक दिया था, "औरतों की इज्जत करना सीखो?'' जेलर भी साथ थे, तो उसने कड़क आवाज में कहा, "तुम्हें छोड़ दिया जायेगा, यदि तुम बता दोगी कि तुम्हारे नेता जी सुभाष कहाँ हैं?''

वे तो हवाई दुर्घटना में चल बसे, " मैंने जबाव दिया, "सारी दुनिया जानती है।' '

"नेता जी जिंदा हैं झूठ बोलती हो तुम कि वे हवाई दुर्घटना में मर गये?'' जेलर ने कहा।

"हाँ नेता जी जिंदा हैं।' '

"तो कहाँ हैं।' '

"मेरे दिल में जिंदा हैं वे।' ' जैसे ही मैंने कहा तो जेलर को गुस्सा आ गया था और बोले, "तो तुम्हारे दिल से हम नेता जी को निकाल देंगे।' '

इस बात को सुनकर जेलर क्रोध से लाल हो गया और उसने बोला कि हम नेताजी को तुम्हारे दिल से निकाल के रहेंगे। नीरा के साथ इतना बुरा बर्ताव किया गया कि उनके कपड़े तक फाड दिये गये। और लोहार को उनके स्तन काटने तक का आदेश दे दिया गया, जेलर की यातनांए यहीं तक नहीं रुकी। उन्होंने नीरा की गर्दन पकड़कर बोला कि मैं तुम्हारे शरीर के टुकड़े दो अलग हिस्सों में कर दूंगा।

कोलकाता से इन्हें कालापानी ले जाया गया वहाँ भी इन्हें यातनांए दी गयी कुछ आदिवासियों की मदद से ये इन्डोनेशिया चली गई और अभेद्य जेल को भी इन्होंने अंगूठा दिखा दिया और वहाँ से ये अपने दो साथियों के साथ भाग निकली।

बागपत के खेकड़ा निवासी साहित्यकार और लेखक तेजपाल धामा बताते हैं कि देश को आजादी मिलने के बाद नीरा आर्य ने हैदराबाद मुक्ति संग्राम में भी खास भूमिका निभाई थी। 26 जुलाई, 1998 को नीरा आार्य ने बीमारी के चलते एक अस्पताल में अंतिम सांस ली। तब तेजपाल धामा ने ही अपने कुछ साथियों के साथ मिलकर उनका अंतिम संस्कार किया था। तेजपाल ने पत्नी मधु के साथ मिलकर नीरा आर्य द्वारा हैदराबाद में बिताये दिनों पर एक पुस्तक लिखी, जिसका नाम है आजाद हिन्द फौज की पहली महिला जासूस। उनकी जयंती पर खेकड़ा बागपत में हर वर्ष एक आयोजन होता है। उनके नाम पर राष्ट्रीय स्तर का नीरा आर्य पुरस्कार भी प्रदान किया जाता है।

निष्कर्ष–

उपरोक्त महिलाओं के अतिरिक्त 1857 की क्रांति से लेकर 1947 देश आजाद होने तक ऐसे कई नाम है जिन्होंने स्वाधीनता के लिये अपना सर्वस्व न्यौछावर कर दिया परन्तु इतिहास में उन्हें समुचित स्थान नहीं दिया गया। 1857 की क्रांति में हर वर्ग की महिलाओं ने महत्वपूर्ण भूमिका निभाई। जैसे– मालती बाई लोधी मैनावती, रणबीरी बाल्मीकी, ताईबाई, देवी चौधुरानी आदि के अतिरिक्त इस क्रांति के दौरान हजारों स्त्रियां फांसी गोली की शिकार हुयी और अनेक घर बर्बाद हुये। अकेले मुजफ्फर नगर में ही 255 स्त्रियों की शहादत का रिकार्ड मिलता है। भारतीय राष्ट्रीय कांग्रेस के संगठित नेतृत्व में लड़ी गई वैधानिक और अंहिसक लड़ाई में भी दो स्कूली किशोर छात्राओं का साहस शांतिघोष और सुनीति चौधरी, उज्ज्वला मजूमदार जैसी वीर क्रांतिकारी महिलाओं का महत्वपूर्ण योगदान रहा।

क्रांतिकारियों के कार्य में प्रत्यक्ष रूप से महत्वपूर्ण सहयोग देने वाली सुशीला देवी, सुनीति देवी, श्री देवी, प्रकाश वती, लीला नाग, इंदुमती सिंह, सुहासिनी गांगुली, सावित्री देवी, रल्लो देई, शास्त्री देवी ऐमू बाई जैसे सैंकड़ों नामों में लेकर उजली मिसालों की यह परम्परा अप्रत्यक्ष सहयोग के हजारों लाखों नामों तक फैली है। कुछ नाम उभरकर सामने आये, व न जाने कितने ही गुमनामी के अंधेरे में गुम हो गये। यहाँ तक कि 3-4 से 6-7 साल तक जेल में रहने वाली अनेक क्रांतिकारी महिलाओं के भी जेल–सजा के रिकार्ड तो मिलते हैं, उनके बारे में अन्य जरूरी जानकारी नहीं, व ऐसी वीरागंनायें जो जेल नहीं गयी उन्हें भारतीय इतिहास में वीरांगना माना ही नहीं गया इनके त्याग व बलिदान को अनदेखा किया गया पर इससे उनकी कुरबानी या महत्वपूर्ण भागेदारी का महत्व तो, कम नहीं हो जाता। आज आजादी के 75वें वर्ष पर हम सब का यह फर्ज है कि ऐसी महान क्रांतिकारी वीरांगनायें जिन्होंने हमारे लिए सर्वस्व बलिदान कर दिया और इतिहास ने भुला दिया। ऐसी वीरांगनाओं का परिचय कार्यशैली को वर्तमान में युवा पीढ़ी तक पहुँचाया जाये एवं युवाओं को इस आजादी की कीमत को पहचानने में मदद करनी चाहिए। सम्पूर्ण समाज के लिए ये प्रेरणा स्रोत हैं और हमेशा इनकी याद हमारे जेहन में विधमान हो। ऐसी ऐतिहासिक धरोहरों का समय–समय पर प्रचार–प्रसार करते रहना हम सबका कर्तव्य है। अमृत महोत्सव पर हम ऐसी महान क्रांतिकारी वीरनारियों को इस लेख के माध्यम से श्रृद्धांजलि अर्पित करते हैं।

REFERENCES

1 कुमार, प्रवीन, 1857 की क्रांति में बाल्मीकि समाज का योगदान, कदम प्रकाशन, दिल्ली, 2019

2 दिनकर, डी.सी., स्वतंत्रता संग्राम में 'अछूतों' का योगदान, गौतम बुक सेन्टर, दिल्ली, 2007

3 Gupta, Charu (18 April, 2016), the Gender of Caste: Representing Dalits in Print, University of Washington Press.

4 Narayan, Badri (7 November, 2006), Women Heroes and Dalit Assertion in North India: Culture, identity and Politics, Sage Publications India.

5 Safvi, Rana (7 April, 2016), The Forgotten Women of 1857, The Wire-GB.

6 Dalit group, recalls its 1857 martyr Uda Devi, The Times of India-GB.

7 Hibbert, Christopher (1980), The Great Mutiny, India 1857, Penguin Books.

8 लखनऊ शहर, कुछ देखा–कुछ सुना (हिन्दी), प्रो. नीलिमा पाण्डेय, बोधि प्रकाशन, जयपुर–302006, दिसम्बर 2019 (प्रथम संस्करण)

9 Freedom Struggle in Uttar Pradesh, Vol. IV, by SAA Rizvi and ML Bhargava, Oxford, ICHR https://hi.wikipedia.org/wiki/ajijan

10 https://navbharattimes.indiatimes.com/astro/dharam-karam/moral-stories/moral-story-of-azizun-bai-in-india-history-31503/

11 https://www.newsplatform.in/in-context/local-tales-of-1857-and-ajijan-bai/

12 https://naveenldh.blogspot.com/2019/01/blog-post_21.html

13 https://www.patrika.com/kanpur-news/unknown-facts-about-freedom-fighter-ajijan-bai-kanpur-news-2415413/

14 कुमार, प्रदीप, बहुजन महानायिकायें, बालाजी प्रिंटर्स, दिल्ली, 2018

15 व्होरा, आशा रानी, क्रांतिकारी महिलायें, प्रकाशन विभाग, सूचना और प्रसारण मंत्रालय, भारत सरकार, पटियाला हाउस, नई दिल्ली–110001, 1986 पृ. 1-4

16 व्होरा, आशा रानी, क्रांतिकारी महिलायें, प्रकाशन विभाग, सूचना और प्रसारण मंत्रालय, भारत सरकार, पटियाला हाउस, नई दिल्ली–110001, 1986, पृ. 101-102

17 आर्य, नीरा, मेरा जीवन संघर्ष, एमपटी कैनवास पब्लिशर्स, दिल्ली, 2022

18 सिन्हा, सत्यदेव नारायण, जासूस महिलायें, रेप्लिका प्रेस प्रकाशन लिमिटेड, इंडिया, 2019

19 गर्ग, सुबोध, चिंगारी 1857 की मेरठ से उत्कर्ष प्रकाशन, कंकर खेडा, मेरठ, 2018